ISSN 0975-735X

हिंदी के मुस्लिम संत और भक्त कवि

शोध दिशा

64

संपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. मीना अग्रवाल

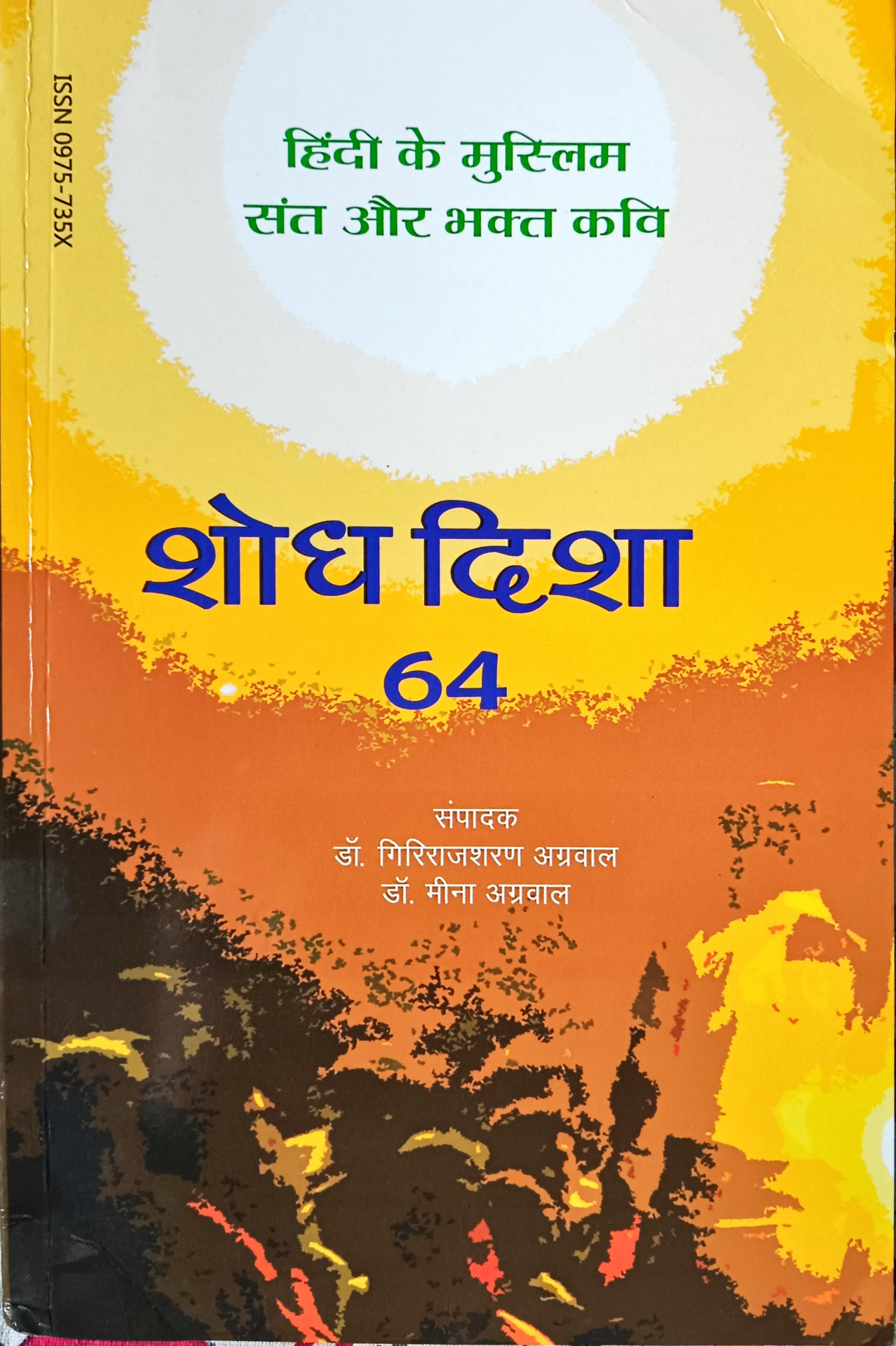

हिंदी के भक्तिकालीन प्रमुख मुस्लिम साहित्यकार/ **डॉ॰ संतोष गिरहे** 165
हिंदी कृष्णकाव्यधारा में मुस्लिम कवियों का योगदान/ **मनीषादेवी** 169
मुस्लिम कवियों का कृष्णप्रेम/ **डॉ॰ चंद्रकांत सिंह** 172
शाह लतीफ के रिसाले के ढाँचे में आध्यात्मिक प्रेम/ **देवी नागरानी** 178
रामभक्ति एवं रामकाव्य में मुस्लिम भक्तों एवं संतों का योगदान/ **डॉ॰ रेणु सिंह** 184
सूफीसंत कवि रोहल की भारतीय संस्कृति को देन/ **डॉ॰ बाबूराम** 187
कृष्णभक्त कवि सैय्यद छेदाशाह/ **विवेककुमार तिवारी** 192
मुस्लिम संतकवि दरिया साहब के साहित्य में सनातन की चेतना/ **डॉ॰ श्यामनंदन** 201
उर्दू काव्य में अभिव्यक्त भगवान कृष्ण का स्वरूप/ **प्रो॰ शैख अकील अहमद** 208
हिंदीभाषा और साहित्य को मुस्लिम साहित्यकारों का योगदान
(प्रारंभिक मुस्लिम साहित्यकार)/ **प्रो॰ शशिप्रभा** 219
आधा भगत कबीर थे, शारा भगत कमाल/ **डॉ॰ वंदना श्रीवास्तव** 223
बुल्लेशाह का सांस्कृतिक प्रदेय/ **डॉ॰ शीरीन सलीम** 230
अब्दुलरहमान के 'संदेशरासक' में समाज और संस्कृति/ **प्रो॰ आदित्य प्रचंडिया** 251
सपनों को उड़ान दो : डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल/ **डॉ॰ राकेश चंद्रा** 255
आलोक का सपना : जिसे हर आँखों को देखना चाहिए/
संजीव जायसवाल 'संजय' 260
हवा हमारी मित्र/ **नीलम राकेश** 261
कविता की समकालीन संवेदना/ **विद्याप्रभाकर डॉ॰ कनुप्रिया प्रचण्डिया** 263
विनायक दामोदर सावरकर
और कमलाकांत त्रिपाठी की पुस्तक सावरकर नायक बनाम प्रतिनायक 366
जीवन की सार्थक फिलसफी से रूबरू/ **जसविन्दर कौर बिन्द्रा** 270
देह-गाथा : स्मृतियों की असाधारण संवेदना / **रेखा भाटिया** 273
मैं... मीना : जीवन सुख-दुख की अनुभूतियों का मेला/ **पारुल तोमर** 276

मुस्लिम कवियों का कृष्णप्रेम

डॉ॰ चंद्रकांत सिंह
प्रोफेसर (हिंदी विभाग)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय,
धौलाधार परिसर-एक, धर्मशाला (काँगड़ा) 176215 हि॰प्र॰

भारत एक आध्यात्मिक देश है जिसके कण-कण में देवताओं का वास रहा है। इतिहास साक्षी है कि ईश्वरभक्ति को लेकर वैदिककाल से ही विभिन्न तरह की साधना एवं उपासना-पद्धतियों का प्रयोग इस धरती पर हुआ। चूँकि भारतीय चिंतन-पद्धति बहुदेववाद पर अवलंबित है, यही कारण है कि प्रारंभ से ही ईश्वर-चिंतन के संदर्भ में विचारों का वैविध्य दिखता है। इन्हीं श्रेष्ठ विचारों से भारतीय संस्कृति की काया पुष्ट होती है। इस्लाम के आगमन से पूर्व यदि भारतीय चिंतन-पद्धति को देखें तो यहाँ साधना की बहुविध कोटियों का विकास हो चुका था, जिनमें शैव, वैष्णव, शाक्त, पांचरात्र आदि का बाहुल्य देखने को मिलता है, किंतु इस्लाम के आगमन के बाद भारत की धरती पर एकेश्वरवाद का प्राबल्य दिखता है। एक ओर सामाजिक-राजनीतिक स्तर पर पर द्वंद्व एवं अधिपत्य की भावनाएँ उठती हैं, वहीं पारस्परिक सौहार्द्र एवं प्रेम को लेकर हिंदू एवं मुस्लिम दोनों ही वर्गों में सार्थक चिंता उपजती है। इसका बड़ा कारण है कि यह पूरा युग सामाजिक-राजनीतिक जड़ता का युग है। वर्चस्वशील शक्तियों द्वारा सामान्य जनता पर अगिनत विचार थोपे गए, जिसने उनकी जीवन-शैली एवं जीवन-दर्शन दोनों को गहरे प्रभावित किया। विषम, जटिल मान्यताओं के बीच हिंदू एवं मुस्लिम दोनों ही वर्गों में विविध साहित्यकारों का आविर्भाव हुआ, जिन्होंने अवसाद और नैराश्य से भारतीय जनता को निकालने का कार्य किया और उनके मन में अपरमित विश्वास का संचरण किया, जिससे कि सामाजिक सामरस्य की मजबूत दीवार उठ सके।

मुस्लिम संतों की अपार देन को कदापि विस्मृत नहीं किया जा सकता। सगुण और निर्गुण दोनों ही क्षेत्रों में इन संतों ने अध्यात्म की लौ जलाई। जब भारतीय संस्कृति का पोर-पोर अवमानना और विभेद से जर्जर हो रहा था ऐसे कठिन समय में इन संतों ने भगवद्भक्ति का सहारा लेकर मनुष्य को हौसला देने का काम किया। मुस्लिम संतों की कविताओं में सेवा, भक्ति एवं प्रेम का विस्तार दिखता है, इनकी कविताओं को पढ़कर लगता है कि ये हर प्रकार की जड़ता को समाप्त कर मनुष्य को मनुष्य समझने के हिमायती हैं। मानुष-प्रेम को ईश्वरीय समझने वाले इन मुस्लिम भक्तकवियों ने किसी संप्रदाय-विशेष का प्रचार-प्रसार न किया, बल्कि भगवद्भक्ति के बल पर मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने का अभूतपूर्व कार्य किया। यही कारण है कि साधना के संदर्भ में अपनाए जा रहे विविध मार्गों के संदर्भ में भी ये क्रांतिधर्मी जान पड़ते हैं, जो बिना किसी की

ISSN 0975-735X